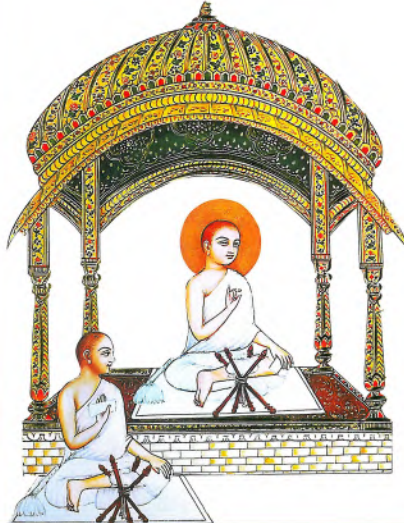


अंगूठे अमृत वसे,  
त्वन्धितणा भंडार।

श्रीगुरु  
गौतम समरिये,  
वोछित फल दातार।।



प्रभु महावीर ने जब पावापुरी पर दिव्य समवसरण की रचना की। उसी समय सोमिल नामक ब्राह्मण ने अपापा नगरी में एक विशाल महायज्ञ का आयोजन किया था। इसमें भारतभर के 11 प्रकाण्ड ब्राह्मण विद्वान (इन्द्रभूति गौतम, अग्निभूति, वायुभूति, व्यक्त, सुधर्म, मण्डित, मौर्यपुत्र, अकम्पित, अचलभ्राता, मैतार्य व प्रभास) अपने 4400 शिष्यों के साथ आए हुए थे। उन्होंने देखा कि देव-देवियों के विमान भगवान महावीर के समवसरण की ओर जा रहे हैं। वे अपने आपको सर्वज्ञ मानते थे। उन्होंने प्रभु की सर्वज्ञता के बारे में सुना तो उनमें से इंद्रभूति गौतम क्रोधित हो गये। उन्होंने मायावी वर्धमान की संज्ञा देते हुए झूठा सर्वज्ञपना दिखाने की बात कही। प्रभु ने जब उन्हें अपनी देशना से संतुष्ट कर दिया तो उन्होंने अपने 500 शिष्यों के साथ प्रवज्या ग्रहण कर ली।

परमात्मा महावीर स्वामी के निर्वाण के पश्चात् तथा देवशर्मा ब्राह्मण को प्रतिबोध देने के पश्चात् गौतम स्वामी तुरन्त लौटना चाहते थे, परन्तु रात्रि होने के कारण रुकना पड़ा। प्रातः लौटने पर जब उन्हें प्रभु के निर्वाण का समाचार मिला तो सुकोमल कमल पुष्प पर जैसे वज्र का आघात होता है, उसी तरह भावविह्वल होकर गौतम स्वामी विलाप करने लगे। महाज्ञानी गौतम स्वामी का यह अत्यन्त करुण रुदन था। उनकी आँखों से अश्रुधारा बहने लगी। कुछ समय बाद गौतमस्वामी ने स्वयं को संभाला। विचार किया - 'अरे! मैं किसका शोक मना रहा हूँ, अपने वीर प्रभु का? वह तो राग-द्वेष से परे वीतरागी थे। मैं भी कितना अज्ञानी हूँ, जो रागी बनकर प्रभु के वीतराग भाव को पहचान नहीं सका।'

गौतमस्वामी को स्मरण हुआ कि भगवान मुझे बार-बार कहते थे - 'हे गौतम! निरालम्ब बन। आलम्बन का त्याग कर दे। अन्तर की दुनिया की तरफ मुड़ जा।' ओह! मेरा यह मोह ही मुझे रोक रहा है। मैं इसको त्यागकर अपने पथ का पथिक स्वयं ही बनूँगा। धीरे-धीरे गौतम स्वामी का चित्त शांत होने लगा। वे राग-दशा से बाहर आये और ज्ञान-दशा की ओर मुड़ गये। उनकी संताप से निकलकर आत्म-निरीक्षण की यात्रा शुरू हो गई। मोह-माया और ममता के बंधन टूटने लगे। उन्होंने स्वयं से कहा - 'ओह! गुरु की देह का ममत्त्व ही मुझे रोके हुए था। यही विचार करके प्रभु ने अंतिम घड़ी में मुझे अपने से अलग कर दिया। मैं दूर चला गया, मेरा मोह क्षीण हो गया।'

इस तरह चिन्तन करते-करते गौतम स्वामी आत्मज्ञान की प्रबल गहराइयों में उतर गए। उनके हृदय में हजारों सूरज का प्रकाश प्रकाशित हो गया। इसके पश्चात् कार्तिक शुक्ला १ के दिन गौतम स्वामी ने चारों घाति कर्मों का शय्य करके लोकालोक को उद्योत करने वाले केवलज्ञान को प्राप्त कर लिया। देव-दुन्दुभि बज उठी। देव और मानव सभी ने मिलकर उनका केवलज्ञान महोत्सव मनाया।

वि.सं. से 470 वर्ष पूर्व आसोज कृष्ण अमावस्या की रात्रि के पिछले प्रहर की यह घटना थी। दीपावली प्रभु महावीर के महानिर्वाण का स्मरण कराती है और उससे अगली सुबह गौतम स्वामी के केवलज्ञान की स्मृति जगा देती है।

केवली बनकर गौतमस्वामी ने 12 वर्षों तक जनकल्याण किया। आयुकाल निकट देखकर सुधर्मास्वामी को गण सौंपकर गुणशील चैत्य में अनशन पूर्वक संधारा करके निर्वाण प्राप्त किया।

